प्रेस विज्ञप्ति

हिन्दुस्तान कॉलेज में हुई इंटरनैट ऑफ थिंग्स लैब की स्थापना

डी.आर.डी.ओ. नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एच. बी. श्रीवास्तव ने किया उद्घाटन

शारदा ग्रुप के प्रतिष्ठित संस्थान हिन्दुस्तान कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी के इलैक्ट्रोनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन विभाग में इंटरनैट ऑफ थिंग्स प्रयोगशाला का उद्घाटन डी.आर.डी.ओ. नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एच. बी. श्रीवास्तव ने किया।

इस अवसर पर शारदा ग्रुप के वाइस चेयरमैन श्री वाई.के.गुप्ता, कार्यकारी उपाध्यक्ष प्रो. वी.के.शर्मा और अधिशासी निदेशक डॉ. डीजी रॉय चौधरी ने बधाई एवं शुभकामनायें दी।

संस्थान के निदेशक डॉ. राजीव कुमार उपाध्याय ने इस प्रयोगशाला के स्थापित होने पर विभाग के सभी शिक्षक एवं छात्र–छात्राओं को बधाई देते हुये कहा कि इंटरनैट ऑफ थिंग्स आगे आने वाले समय में बहुत ही आवश्यक होगा और पूरे संसार में इसका उपयोग होगा। आज–कल यह तकनीक स्मार्ट होम्स, स्वचालित विद्युतीकरण, वातानुकूलित सिस्टम जिसमें वाई–फाई तकनीक का प्रयोग होता है, हर ऐसे स्थान पर इंटरनैट ऑफ थिंग्स प्रयोग किया जा रहा है और उन्होंने यह भी बताया कि छात्र अगर इस प्रयोगशाला में रूचि लेकर उपयोग करेंगे तो उनको बहुत कुछ सीखने के लिए मिलेगा।

इलैक्ट्रोनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. संजय जैन ने अपने उद्बोधन में बताया कि इंटरनैट ऑफ थिंग्स एक मूल अवधारणा का प्रतिनिधित्व करता है जो एक नेटवर्क में कई उपकरणों की क्षमता का वर्णन करता है जो अलग–अलग वस्तुओं से डेटा एकत्र करता है और फिर मानव बातचीत के बिना इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर में समान साझा करता है। इंटरनैट के बारे सामान्य सोच में लैपटॉप और मोबाइल जेसे उपकरण शामिल हैं, जिनका उपयोग लोग आपस में सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिये करते हैं लेकिन वास्तविक रूप

मे इंटरनैट कोई अधिक मानवीय सहभागिता आवश्यक प्लेटफॉर्म नहीं है। आज यह एक ऐसा नेटवर्क बन गया है जहाँ उपकरण बिना किसी बातचीत के संकेतों को एकत्रित और संचारित करके एक दूसरे के साथ संवाद और संचार करते हैं। इसे 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' कहा जाता है।

डीआरडीओ के निदेशक डॉ. एच. बी. श्रीवास्तव ने इंटरनैट ऑफ थिंग्स प्रयोगशाला का उद्घाटन करने के बाद छात्रों को सम्बोधित करते हुये बताया कि इंटरनैट ऑफ थिंग्स आने वाले समय की उद्योग में परिवर्तन लाने वाली एक मात्र तकनीकी है। उन्होंने यह भी बताया कि रोजमर्रा की जिन्दगी में बहुत दूर रहते हुये भी किसी वस्तु या स्थिति को नियंत्रण करने के लिए इंटरनैट ऑफ थिंग्स प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि यह तकनीकी में कम्प्यूटर साइंस, इलैक्ट्रोनिक्स, इलैक्ट्रीकल और मेकैनीकल का भी छात्रों की भागीदारी हो सकती है यह प्रयोगशाला इंटरडिसीप्लिनरी कोर्स में भी उपयोग की जा सकती है। इंटरनैट ऑफ थिंग्स से इंटरनैट प्रयोग करते हुये बहुत सारे युक्तियाँ जैसे– हार्ट मॉनीटरिंग सिस्टम, सेंसर्स युक्त मोटर वाहन, डी.एन.ए. एनालाइसिस एवं नियंत्रण भी कर सकते हैं। इंटरनैट ऑफ थिंग्स की बजह से नेटवर्क की स्पीड में अत्यंत बढ़ोत्तरी होगी और विशेषज्ञों का कहना है कि वर्ष 2020 तक लगभग 30 अरब वस्तु इंटरनैट द्वारा जुड़ने की उम्मीद है।

संस्थान के इंडस्ट्री इंटरफेस के प्रमुख श्री टीएसएस सेंथिल इस प्रयोगशाला के संयोजक रहेंगे।

इस लैब को बनाने में मुख्य रूप से इलैक्ट्रोनिक्स एण्ड कम्युनिकेशन विभाग के उप–विभागाध्यक्ष श्री संजय सिंह, श्री मुकुन्द लाल, श्रीमती रूपाली महाजन, श्री राहुल जैन, श्री अजीत सिंह, श्री हिमांशु राजपूत ने अहम भूमिका निभाई की।

इस अवसर पर संस्थान के डीन स्टूडेंट वैलफेयर डॉ. संदीप अग्रवाल, डीन फैकल्टी डॉ. हरेन्द्र सिंह, डीन रिसर्च एण्ड डवलपमेंट डॉ. एम.एस. गौर, सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, संस्थान के समस्त शिक्षक, कर्मचारी और छात्र–छात्रायें उपस्थित रहे।